26

सब्त के विषय में प्रश्न

(12:1-14)

अध्याय 11 में आरम्भ किया गया ठुकराए जाने का विषय इस अध्याय में जारी रहता है। मत्ती ने यीशु के इस विरोध को समझाने के लिए वैर के कई उदाहरणों का इस्तेमाल किया। इस नकारात्मक सुर के साथ, मत्ती अपने पाठकों को न्याय के दृष्टांतों के लिए भी तैयार कर रहा था (अध्याय 13)।

फरीसियों के साथ तीन विवाद (12:1-14, 22-37, 38-45) मत्ती के वैर के विवरण का एक बड़ा भाग हैं। इन झगड़ों का महत्व एक अन्तराल (12:15-21) और एक उपसंहार के साथ दिखाया गया है (12:46-50)।[1] फरीसी लोग वे ''ज्ञानी और समझदार'' थे, जिनसे परमेश्वर की समझ को छुपाकर रखा गया था (11:25)। उनकी परम्पराएं जो एक कठिन जुआ और भारी बोझ था, यीशु की शिक्षाओं के, जो आसान जुए और हल्के बोझ की पेशकश करती थीं, बिल्कुल उलट थीं (11:30)।

यीशु के प्रति धार्मिक लोगों की नाराजगी सब्त की परम्पराओं को उसके तोड़ने पर केन्द्रित थी (देखें यूहन्ना 5:1-18)। उसने सब्त के विषय में व्यवस्था की वास्तविक शिक्षाओं को कभी नहीं तोड़ा था पर उन परम्पराओं का विरोध अवश्य किया था, जो सदियों से यहूदी गुरुओं ने बना ली थीं। व्यवस्था को न तोड़ने के एक प्रयास में उन्होंने ''तू विश्राम दिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना'' (निर्गमन 20:8) की सीधी सी बात को जटिल बना दिया था। उन्होंने सब्त को बोझ बना दिया था। यीशु और उसके चेले इन परम्पराओं को तोड़ रहे थे जिस कारण उन्हें सवालों का सामना करना पड़ा।

कटाई के द्वारा अपवित्र करना? (12:1-8)

[1]उस समय यीशु सब्त के दिन खेतों में से होकर जा रहा था, और उस के चेलों को भूख लगी, तो वे बालें तोड़-तोड़ कर खाने लगे। [2]फरीसियों ने यह देखकर उससे कहा, ''देख, तेरे चेले वह काम कर रहे हैं, जो सब्त के दिन करना उचित नहीं।'' [3]उसने उनसे कहा, ''क्या तुमने नहीं पढ़ा कि दाऊद ने, जब वह और उसके साथी भूखे हुए तो क्या किया? [4]वह कैसे परमेश्वर के घर में गया, और भेंट की रोटियां खाईं, जिन्हें खाना न तो उसे और न उसके साथियों को पर केवल याजकों को उचित था? [5]या क्या तुमने व्यवस्था में नहीं पढ़ा कि याजक सब्त के दिन मन्दिर में सब्त के दिन की विधि को तोड़ने पर भी निर्दोष ठहरते हैं? [6]पर मैं तुमसे कहता हूं, कि यहां वह है, जो मन्दिर से भी बड़ा है। [7]यदि तुम इसका अर्थ जानते, मैं दया से प्रसन्न होता हूं, बलिदान से नहीं, तो तुम निर्दोष को दोषी न ठहराते। [8]मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का भी प्रभु है।''

आयत 1. उस समय मत्ती द्वारा विवरणों को इकट्ठा बुनने के लिए इस्तेमाल किया गया एक अनिश्चित वाक्यांश है (11:25; 14:1)। **यीशु** अपने **चेलों** के साथ **सब्त के दिन खेतों में से होकर जा रहा था**। पहली सदी में फलस्तीन में इन खेतों के आस-पास बाड़ नहीं होती थी। इसके बजाय उन्हें छोटी-छोटी पगडंडियों के द्वारा अलग किया जाता था और उनकी सीमाएं पत्थर रखकर तय की जाती थीं (व्यवस्थाविवरण 19:14; 27:17; अय्यूब 24:2; नीतिवचन 22:28; 23:10)। चलते-चलते **चेलों को भूख लगी तो वो बालें तोड़-तोड़कर खाने लगे**। ऐसा करते हुए वे व्यवस्था के दायरे में ही थे। व्यवस्थाविवरण 23:25 कहता है, ''जब तू किसी दूसरे के खड़े खेत में जाए, तब तू हाथ से बालें तोड़ सकता है, परन्तु किसी दूसरे के खड़े खेत पर हंसुआ न लगाना।'' चेले कटाई नहीं कर रहे थे, बल्कि वे केवल अपनी भूख मिटाने के लिए बालें तोड़ रहे थे।

आयत 2. फरीसियों ने यह आरोप क्यों लगाया कि **चेले** ऐसा काम कर रहे हैं, जो **सब्त** के दिन करना **उचित नहीं** था? व्यवस्था सब्त के दिन काम करने की मनाही करती थी (निर्गमन 20:10; 34:21; लैव्यव्यवस्था 23:3; व्यवस्थाविवरण 5:12-15), परन्तु कुछ ही विशेष बातें दी गई थीं। खाना बनाने के लिए आग जलाना (निर्गमन 16:22-30; 35:3), ईंधन इकट्ठा करना (गिनती 15:32-36), बोझ ले जाना (यिर्मयाह 17:21, 22), या किसी प्रकार का सौदा करना (नहेम्याह 10:31; 13:15, 19) व्यवस्था के विरुद्ध था।

परन्तु रब्बियों की परम्परांएं और गहराई में चली गईं। मनुष्य के लिए नियम जो मिशनाह में सम्भालकर रखे गए थे, कटाई करने, अनाज पीटने, भूसी उड़ाना और अनाज को पीसने सहित उन्नतालीस विशेष कार्यों को गलत ठहराया गया था।[2] चेलों के बालें तोड़ने को फरीसियों द्वारा कटाई करना मान लिया गया था। अनाज को हाथों में मसलने का (लूका 6:2) अर्थ अनाज पीटने और फूक मारकर दाने साफ़ करने को भूसी उड़ाने के रूप में मान लिया गया था। शायद उन्होंने जो अनाज को खाने से पहले इसे अपने हाथों में मसला था, इसे भी व्यवस्था का उल्लंघन मान लिया गया था।

फरीसी लोग सब्त के दिन गेहूं के खेत में क्या कर रहे थे? निश्चय ही वे यीशु और उसके चेलों पर आरोप लगाने का बहाना ढूंढ़ने के लिए वहां गए थे। उन्होंने यीशु से पूछा कि चेले क्या कर रहे हैं क्योंकि एक रब्बी अपने छात्रों के व्यवहार के लिए ज़िम्मेदार था। यह तथ्य कि यीशु ने उनके व्यवहार पर अफ़सोस जताया, उन्हें ''निर्दोष'' कहने की पुष्टि है (12:7)।

आयतें 3, 4. यीशु ने चेलों को अनाज की बालें तोड़ने और खाने के लिए डांटा नहीं। उसने **''क्या तुम ने नहीं पढ़ा?''** के प्रश्न के साथ परिचय देते हुए पुराने नियम के दो उदाहरणों के साथ उनका बचाव किया। यीशु कई अवसरों पर प्रश्न और पवित्र शास्त्र की ओर ध्यान दिलाने के साथ सामना करने की इस नीति को प्रभावशाली ढंग से इस्तेमाल करता था (12:3, 5; 19:4; 21:16, 42; 22:31), जो रब्बियों के तर्क में एक सामान्य व्यवहार था।[3] बेशक फरीसियों को यह विशेष प्रश्न परेशान करने वाला लगा होगा।

यीशु का पहला उदाहरण **दाऊद** का था, जिसे वे बहुत सराहते थे। उसने उन्हें तब की घटना याद दिलाई जब दाऊद, राजा शाऊल के क्रोध से भाग रहा था (1 शमूएल 21:1-6)। दाऊद नोब के पास, **परमेश्वर के घर में** अर्थात उस तम्बू में गया जहां वाचा का संदूक रखा गया था।

वह अहीमेलेक नामक याजक के पास गया, जो नोब में उस समय के महायाजक अहीतूब का बेटा था (1 शमूएल 22:11)।

धोखे से दाऊद ने याजक को विश्वास दिलाया कि वह राजा शाऊल के लिए एक गुप्त मिशन पर आया हुआ है। फिर उसने रोटियां मांगीं, क्योंकि वह और **उसके साथी भूखे** थे। अहीमेलेक ने दाऊद और उसके साथियों को **भेंट की रोटियां** अर्थात ''मेज़ पर की रोटियां'' दीं (निर्गमन 25:30; 35:13; 39:36), जो तम्बू में मेज़ पर थीं। यह रोटी **याजकों** के खाने के लिए थी (लैव्यव्यवस्था 24:5-9)। विशेष मेज़ जो ''भेंट की रोटियों'' के लिए तैयार की गई थी (निर्गमन 25:23-30), छह-छह रोटियों की दो कतारों में बारह रोटियां रखी गई थीं। ये रोटियां इस्राएल के बारह गोत्रों को दर्शाती और परमेश्वर के साथ उनकी निरन्तर सहभागिता का प्रतीक थीं। इस्राएल को परमेश्वर के लिए पवित्र किया गया था और इसी प्रकार से ये रोटियां भी याजकों के लिए पवित्र की गई थीं (लैव्यव्यवस्था 24:5-9)। रोटियां हर शुक्रवार को पकाई जाती थीं। पुरानी रोटियों की जगह प्रत्येक सब्त के दिन नई रोटियां रखने पर याजक पुरानी रोटियां खा लेते थे (1 शमूएल 21:6)।

यहां समझाने वाली दोहरी बात है। पहले तो यह कि दाऊद ने वास्तव में व्यवस्था को तोड़ा था, जबकि प्रभु के चेलों ने मनुष्य की बनाई धार्मिक परम्पराओं को तोड़ा था। फरीसियों ने दाऊद को व्यवस्था का उल्लंघन करने के लिए दोषी नहीं ठहराया पर वे अपनी परम्परा के उल्लंघन के लिए यीशु के चेलों को दोषी ठहरा रहे थे। दूसरा, यीशु के मन में, लोगों को व्यवस्था के ऊपर प्राथमिकता लेनी चाहिए: ''सब्त का दिन मनुष्य के लिए बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिए'' (मरकुस 2:27)।

आयत 5. यीशु द्वारा इस्तेमाल किए गए दूसरे उदाहरण में कई सदियों से **सब्त के दिन जो कुछ याजक** करते थे, उस पर ध्यान था। सब्त के दिन काम करने की व्यवस्था की मनाही के बावजूद याजक उसी दिन धूप जलाने, दीपकों को ठीक करने, पवित्र की हुई रोटियों को बदलने और दोहरा बलिदान चढ़ाने सहित कई काम करते थे (निर्गमन 30:7, 8; लैव्यव्यवस्था 24:5-8; गिनती 28:9, 10)। फरीसियों द्वारा इन्हें सब्त का उल्लंघन नहीं माना जाता था, क्योंकि ये काम व्यवस्था के द्वारा किए जाने आवश्यक थे।[4] याजक **मन्दिर** में सेवा कर रहे थे जिस कारण वे इस मामले में **निर्दोष** थे और सब्त का उल्लंघन नहीं कर रहे थे।

सब्त को तोड़ने के वाक्यांश में ''तोड़ने'' (*bebēloō*) का बेहतर अनुवाद ''अपवित्र करना'' है (NIV)। यीशु कह रहा था कि याजक के कर्त्तव्य सब्त के आम नियमों को तोड़ने को विवश करते थे।

आयत 6. फिर यीशु ने घोषणा की, ''**पर मैं तुम से यह कहता हूं कि यहां वह है जो मन्दिर से भी बड़ा है**।'' डग्लस आर. ए. हेयर को लगा कि यीशु के तर्क को इस प्रकार से कहा जा सकता है: ''यदि मन्दिर को सब्त से बढ़कर वरीयता दी जाती है तो जो मन्दिर से बड़ा है वह सब्त से कितना बेहतर होगा।''[5] उसकी व्याख्या ''बड़ा है'' (*meizon;* अकर्मक विशेषण) से जो यीशु का अर्थ था, उसके हर सवाल का जवाब पूरी तरह से नहीं देती।

''बड़ा है'' के यीशु से परिचय को 12:41, 42 में दिए गए तथ्य से समर्थन मिलता है जहां एक अलग अकर्मक विशेषण का इस्तेमाल किया गया है क्योंकि उसमें एक अन्तर किया गया है

जिसमें पुराने नियम के लोग भी हैं (देखें यूहन्ना 4:12; 5:46; 8:53)। इसके अलावा यीशु का व्यक्तित्व मन्दिर के विपरीत मेल खाता है क्योंकि परमेश्वर की परिपूर्णता उसमें वास करती है (कुलुस्सियों 2:9; देखें यूहन्ना 2:18-22)।

''बड़ा है'' के लिए एक और सम्भावित परिचय यीशु का अधिकार, उसका संदेश, और राज्य का उदय होना है। जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे का मानना था कि चेलों की सेवा ''बड़ा है'' ही थी:

> यह वह सेवा थी, जो वे यीशु की कर रहे थे। ऐसी सेवा जो कई बार भोजन दिलाने के सामान्य साधनों को रोक देती है। उसकी सेवा करने का जो मन्दिर से बड़ा है उसका दायित्व; याजकों के मन्दिर की सेवा से भी बड़ा है। तो फिर यदि याजक सही थे तो चेले उससे भी बढ़कर [जो उन्होंने किया उसमें सही] थे।[6]

आयत 7. एक बार फिर यीशु ने करुणा दिखाने के महत्व को समझाने के लिए होशे भविष्यवक्ता की बात दोहराई: **''मैं दया से प्रसन्न होता हूं बलिदान से नहीं''** (होशे 6:6; 9:13 पर टिप्पणियां देखें)। सब्त के दिन बलिदान भेंट करना व्यवस्था के अधीन याजकों द्वारा किया जाने वाला काम है, परन्तु मानवीय करुणा के स्नेह को दिखाना उनके कर्त्तव्य से कहीं महत्वपूर्ण है। यदि फरीसियों को होशे के शब्दों की समझ होती तो वे प्रभु के चेलों को **दोषी न ठहराते,** जिन्हें **निर्दोष** कहा गया था। इसके बजाय वे उन पर दया करते।

आयत 8. अपने चेलों के कामों के लिए यीशु का बचाव अन्त में यह था कि वह **सब्त के दिन का प्रभु** है। यह दावा करते हुए यीशु अपने ईश्वरीय अधिकार का दावा कर रहा था। उसकी ईश्वरीयता ने उसे सब्त के नियम की व्याख्या करने का (फरीसियों के विपरीत) और इच्छा होने पर इसे अलग करने का भी अधिकार दिया। यीशु के पिछले कामों से पहले ही यह समझा दिया गया था कि वह सब्त के दिन का प्रभु है और वह सब्त के विषय में न्याय और सही ढंग से उसके माने जाने को ठहरा सकता है।[7]

यीशु ने सब्त के दिन लगातार आराधनालय में जाते रहकर इस दिन का आदर किया (लूका 4:16-27)। उस पर इसे तोड़ने के आरोप केवल सब्त के दिन दूसरों पर की गई दया के उसके कामों में लगाए जा सकते थे (12:9-14; लूका 13:10-17; 14:1-6; यूहन्ना 5:1-9; 7:23; 9:1-7, 14)। प्रभु के चेले मनुष्य की बनाई परम्पराओं के ऊपर उसे रखने के लिए अपने समर्पण और सेवा में सही थे। इसके विपरीत फरीसी चेलों की आलोचना गलत कर रहे थे। ऐसा करके उन्होंने सब्त के प्रभु का अपमान किया।

चंगाई के द्वारा अपवित्र करना? (12:9-14)

[9]वहां से चलकर वह उनके आराधनालय में आया। [10]वहां एक मनुष्य था, जिस का हाथ सूखा हुआ था। उन्होंने यीशु पर दोष लगाने के लिए उससे पूछा, ''क्या सब्त के दिन चंगा करना उचित है?'' [11]उसने उनसे कहा, ''तुम में ऐसा कौन है जिसकी एक ही भेड़ हो, और वह सब्त के दिन गड्ढे में गिर जाए, तो वह उसे पकड़कर न निकाले? [12]भला मनुष्य का मूल्य भेड़ से कितना बढ़ कर है! इसलिए सब्त के दिन भलाई करना उचित है।'' तब उसने उस मनुष्य से कहा, ''अपना हाथ बढ़ा।'' [13]उसने बढ़ाया, और वह फिर दूसरे

हाथ की तरह अच्छा हो गया। [14]तब फरीसियों ने बाहर जाकर उसके विरोध में सम्मति की कि उसे किस प्रकार नष्ट करें।

आयत 9. वहां से चलकर (देखें 11:1; 13:53; 15:29; 19:1) दृश्य को **उनके आराधनालय** के दृश्य के साथ खेत के दृश्य से जोड़ देता है। सब्त का दिन मूलतया लोगों के विश्राम के लिए था पर यह एक पवित्र दिन बन गया था जिस पर यहूदी लोग आराधनालय में प्रार्थना और व्यवस्था का अध्ययन करने के लिए भी इकट्ठा होते थे। सर्वनाम शब्द ''उनके'' ''आराधनालय'' में सुधार करते हुए यीशु और यहूदी व्यवस्था के बीच और मत्ती के समय में कलीसिया और यहूदी मत के बीच अन्तर को दर्शा सकता है। एक और सम्भावना यह है कि इससे केवल यीशु और उसके चेलों को स्थानीय समुदाय के लोगों से अलग किया गया (देखें 4:23; 9:35; 10:17; 13:54)।

आयत 10. जब यीशु आराधनालय में गया जो सम्भवतया कफ़रनहूम में था, तो उसे उस सच्चाई को, जो उसने सब्त के विषय में बताई थी प्रचार करने का बिल्कुल सही अवसर मिल गया। **वहां एक मनुष्य था जिसका हाथ सूखा हुआ था।** ''सूखा हुआ'' के लिए शब्द (*xēros*) का अनुवाद ''लकवा मारा'' भी हो सकता है। यीशु के विरोधियों ने उससे पूछा, **''क्या सब्त के दिन चंगा करना उचित है?''** यह सवाल करके वे उससे जानकारी नहीं मांग रहे थे इसके बजाय वे **उस पर दोष** लगाने की कोशिश कर रहे थे। आयत 14 यीशु के विरोधियों को फरीसियों के रूप में दिखाती है।

मरकुस के विवरण में यीशु ने सूखे हाथ वाले आदमी से ''बीच में खड़ा'' होने की आज्ञा दी (मरकुस 3:3)। शायद उसने ऐसा वहां उपस्थित लोगों को उस व्यक्ति के हाथ की बुरी हालत को देखने देने के लिए किया। फिर उसने अपने आलोचकों से पूछा, ''क्या सब्त के दिन भला करना उचित है या बुरा करना, प्राण को बचाना या मारना?'' (मरकुस 3:4)। परन्तु किसी ने जवाब नहीं दिया।

आयत 11. उस प्रश्न का उत्तर देने के लिए जो उसने स्वयं ही किया था यीशु ने उन्हें एक उदाहरण दिया। उसने एक **आदमी** की बात बताई जिसके पास **एक ही भेड़** हो जो **सब्त के दिन गड्ढे में** गिर गई। उस स्थिति में कौन नीचे उतरकर उस भेड़ को गड्ढे में से नहीं निकालेगा? ऐसे ही एक अवसर पर, यीशु ने पूछा, ''तुम में से ऐसा कौन है, जिस का गदहा या बैल कुएं में गिर जाए और वह सब्त के दिन उसे तुरन्त बाहर न निकाल ले?'' (लूका 14:5)। विशेष परिस्थितियों में फरीसी सब्त के दिन इस प्रकार से किसी पशु को बचाने की अनुमति देते थे।[8]

आयत 12. यीशु ने अपनी बात स्पष्ट की: **''भला, मनुष्य का मूल्य भेड़ से कितना बढ़कर है!''** (देखें 6:26; 10:31; लूका 15:3-7)। परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया और सारी सृष्टि के ऊपर अधिकार दिया (उत्पत्ति 1:27, 28)। मनुष्य परमेश्वर की सृष्टि का शीर्ष अर्थात मुकुट है (भजन संहिता 8:3-8)।

सब्त के विषय में यहूदी नियम चाहे बहुत कठोर थे पर उस दिन उनमें करुणा के कुछ कार्यों को करने की अनुमति थी। यदि किसी का प्राण खतरे में हो, तो उसे बचाने के लिए डॉक्टरी सहायता दी जा सकती है।[9] यदि कोई स्त्री बच्चे को जन्म दे रही हो, तो बच्चे को जन्म दिलाने के

लिए दाई को बुलाया जा सकता है।[10] परन्तु यदि किसी व्यक्ति की स्थिति प्राणघातक न हो तो आपात ढंग नहीं अपनाए जाते थे।[11] इस नियम का एक अपवाद आठवें दिन खतने का होना था; यह पवित्र संस्कार सब्त की पाबन्दियों में नहीं आता था (यूहन्ना 7:22, 23)।[12]

यीशु के सामने आए मामले, सूखे हाथ वाला आदमी प्राण-घातक स्थिति में नहीं था। यहूदी अगुओं को लगा कि यीशु को ऐसे लोगों को सप्ताह के छह दिनों के दौरान चंगाई देनी चाहिए न कि सब्त के दिन (लूका 13:14)। यीशु ने बताया कि व्यवस्था **सब्त के दिन भलाई** करने की अनुमति देती है। बेशक व्यवस्था बुराई करने की मनाही करती है। यीशु के दृष्टिकोण से, इस व्यक्ति को उसकी दयनीय स्थिति में रहने देना, जबकि उसके लिए कुछ किया जा सकता था, बुराई करना ही होना था। यीशु के भलाई करने के विपरीत, फरीसियों ने उसे मार डालने का षड्यन्त्र रचकर सब्त के दिन बुराई की (12:14)।

आयत 13. मरकुस ने जोड़ा है कि जब फरीसियों ने उसकी बात का जवाब नहीं दिया तो यीशु ''उनके मन की कठोरता से उदास हुआ'' (मरकुस 3:5)। उन परिणामों के बावजूद जो उसे पता था, होने वाले हैं, यीशु ने सूखे हाथ वाले **मनुष्य** से कहा, **''अपना हाथ बढ़ा!''** उसकी बात मानते ही उसका हाथ **दूसरे हाथ की तरह अच्छा हो गया**। यीशु ने केवल बोलकर उसे चंगाई दे दी। स्पष्टतया उसने उस व्यक्ति पर अपने हाथ भी नहीं रखे।

आयत 14. फरीसियों ने तुरन्त आराधनालय में से जाकर हेरोदियों के साथ **सम्मत्ति** की (मरकुस 3:6) कि **उसे किस प्रकार नष्ट करें**। यह दोनों गुट आमतौर पर एक दूसरे के शत्रु थे। हेरोदी लोग रोमी कब्जे के साथ-साथ हेरोदेसी शासन का भी समर्थन करते थे। फरीसी ज़ोरदार ढंग से दोनों के विरोधी थे। आमतौर पर फरीसियों और हेरोदियों का एक-दूसरे के साथ कोई लेन-देन नहीं था, परन्तु घृणा से प्रेरित होकर दोनों गुट यीशु को नष्ट करने के षडयन्त्र में मिल गए।

व्यवस्था में सब्त को स्पष्ट रूप से तोड़ने के लिए ठहराया गया दण्ड मृत्यु का दण्ड था (निर्गमन 31:14; 35:2; गिनती 15:35)। फरीसी लोग चाहते थे कि यीशु व्यवस्था को तोड़े ताकि वे उसे मृत्यु दे सकें। परन्तु यीशु ने सब्त के नियम को नहीं, बल्कि केवल इसके सम्बन्ध में बनाई गई फरीसियों की परम्पराओं को तोड़ा। फिर यहूदी लोग रोमी शासन के अधीन थे, इस कारण मृत्यु दण्ड देने के उनके अधिकार सीमित थे (देखें यूहन्ना 18:31)। शत्रुओं के इस मिलन से बताया जा सकता है कि हेरोदियों ने फरीसियों के साथ सम्मति क्यों की; उनके कामों ने उन्हें गलील के ऊपर चौथाई के रोमी हाकिम हेरोदेस अन्तिपास के एक कदम नज़दीक कर दिया। उसे यीशु को मृत्यु दण्ड देने का अधिकार था (लूका 13:31; 23:6-16), बिल्कुल वैसे ही जैसे उसने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला को मृत्यु दी गई (14:1-12)।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

''सब्त के दिन को स्मरण रखना'' (12:1-14)

सब्त के दिन को मानना पुराने नियम की व्यवस्था का एक भाग था, जिसे मिटा दिया गया (इफिसियों 2:13-16; कुलुसिस्यों 2:14)। मसीही लोग सब्त के नियमों को मानने सहित व्यवस्था की किसी भी बात को मानने को बाध्य नहीं हैं। चौथी आज्ञा उन दस आज्ञाओं में से केवल एक थी जो मसीह की व्यवस्था में नहीं डाली गई (निर्गमन 20:8)। कुछ लोग रविवार के दिन को ''मसीही सब्त'' बताते हैं, परन्तु ऐसा कुछ नहीं है। सब्त का दिन सप्ताह का सातवां दिन अर्थात शनिवार का दिन ही है (निर्गमन 20:8-11)। मसीही लोगों के लिए आराधना का दिन रविवार, अर्थात सप्ताह का पहला दिन या प्रभुवार है (प्रेरितों 20:7; 1 कुरिन्थियों 16:2), जिसे प्रभु का दिन कहा गया है (प्रकाशितवाक्य 1:10)। आरम्भिक मसीही लोगों के आराधना की विशेष गतिविधियों के साथ-साथ विशेष दिन और समय की पुष्टि ऐतिहासिक लेखों से होती है।[13]

मसीही लोगों के लिए सप्ताह का पहला दिन आराधना का दिन इसलिए बन गया क्योंकि यही वह दिन था जब यीशु कब्र में से जी उठा था (28:1-6; लूका 24:1-6; यूहन्ना 20:1-9)। जहां तक हमें मालूम है यीशु के जी उठने के बाद हर दर्शन में किसी विशेष दिन से जुड़ी बातें सप्ताह के पहले दिन पर हुईं। रविवार का दिन वह है जब मसीही लोग प्रार्थना करने, परमेश्वर की महिमा गाने, परमेश्वर के वचन से संदेश सुनने, अपना धन देने और प्रभु भोज को मनाने के लिए इकट्ठा होते हैं।

नया नियम मसीही लोगों से प्रेरितों के उदाहरण और प्रत्यक्ष आज्ञा दोनों के द्वारा, प्रभु के दिन इकट्ठा होने की शिक्षा देता है। यदि हमें प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन प्रभु भोज में भाग लेना है, जैसा कि आरम्भिक कलीसिया की रीति थी (प्रेरितों 20:7; 1 कुरिन्थियों 11:20-34; 16:2) तो हमारे लिए आवश्यक है कि हम उसमें उपस्थित हों। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने यहूदी मसीही लोगों को यह प्रोत्साहित करने के लिए लिखा कि ''एक-दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों-ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों-त्यों और भी अधिक यह किया करो'' (इब्रानियों 10:25; NIV)। आरम्भिक मसीही सप्ताह के पहले दिन इकट्ठा होते थे, जो नये नियम और अन्य ऐतिहासिक विवरणों के द्वारा पुष्टि किया गया तथ्य है, इसलिए इब्रानियों की पुस्तक में बताए गए इकट्ठा होने की बात स्पष्ट तथ्य है। परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखक की इच्छा नहीं थी कि उसके पाठक प्रभु के दिन कलीसिया के साथ इकट्ठा होने को छोड़ें।

''मनुष्य का पुत्र'' (12:8)

यीशु के लिए बार-बार इस्तेमाल किया गया शीर्षक ''मनुष्य का पुत्र'' नये नियम में अठासी बार मिलता है; और कुछ अपवादों के साथ मसीह ने स्वयं इसे इस्तेमाल किया। उसे अपने लिए ''परमेश्वर का पुत्र'' शीर्षक को चुनने का हर अधिकार था, परन्तु स्पष्टतया उसने ''मनुष्य की पुत्र'' को प्राथमिकता दी। यह इस बात का संकेत देता हुआ प्रतीत होता है कि यीशु इस वाक्यांश का इस्तेमाल अपने लिए करते हुए एक महत्वपूर्ण बात कह रहा था। एक ओर यह उसके पूर्ण

मनुष्य होने पर ज़ोर देता है। दूसरी ओर यह छुटकारे और उसके अधिकारात्मक मिशन पर भी ज़ोर देता है। परमेश्वर मनुष्य बना ताकि वह हमें अपने साथ उपयुक्त सम्बन्ध में लाने के लिए हमारे जैसा हो सके ताकि उसके अधिकार का इस्तेमाल हमारी भलाई के लिए हो।

टिप्पणियां

[1]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू*, इंटरप्रेटेशन (लुईसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 130. [2]मिशनाह *शब्बथ* 7.2. [3]डेविड हिल, द *गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू*, द न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 210. [4]''बलिदानपूर्वक सेवा सब्त से बढ़कर है'' (टालमुड *शब्बथ* 132बी)। [5]हेयर, 132. [6]जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे, द *न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री*, अंक 1, *मैथ्यू एंड मार्क* (पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 104. [7]वही, 105. [8]देखें टालमुड *शब्बथ* 128बी; *बाबा मेज़ियाह* 32बी। मृत सागर के पत्रों से यह पता चलता है कि कुमरान का समुदाय और भी कठोर था: ''कोई मनुष्य सब्त के दिन जन्म दिलाने के लिए किसी पशु की सहायता नहीं करेगा और यदि यह कुण्ड या गड्ढे में गिर जाए, तो वह उसे सब्त के दिन नहीं निकालेगा। ... परन्तु यदि कोई व्यक्ति पानी या आग में गिर जाता है, तो उसे सीढ़ी या रस्सी या (किसी ऐसे) बर्तन की सहायता से निकाला जाए'' (*डमेसकस रूल* 11.13, 14, 16, 17)। [9]''प्राण के लिए खतरे के संदेश की कोई भी बात सब्त की पाबन्दियों से ऊपर है'' (मिशनाह *योमा* 8.6)। [10]मिशनाह *शब्बथ* 18.3.

[11]उदाहरण के लिए, सब्त के दिन टूटा हुआ अंग ठीक करना अनुचित है। (मिशनाह *शब्बथ* 22.6.) [12]वही, 18.3-19.5. [13]प्लाइनी *लैटर्स* 10.96; जस्टिन मार्टिर *अपोलोजी* 1.67; क्लेमेंट ऑफ़ एलग्जेंडरिया *मिसलेनीस* 6.14; द *इंस्ट्रक्टर* 3.11.